Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-2, Issue-9, Continuous Issue-15, September - October 2022

शुकानन्दमुनि कृत् 'बुद्धिप्रदीप' ग्रन्थ में साधुपुरुष के लक्षण

प्रस्तावना :-

स्वामिनारायण संप्रदाय के भगवान स्वामिनारायण समकालीन संत शुकानन्दमुनि ने 'बुद्धिप्रदीप' नामक ग्रन्थ कि रचना कि है | इस संस्कृत ग्रन्थ कि भाषा संस्कृत है | १०५ श्लोक वाले इस लघुग्रन्थ में ब्रह्मप्राप्ति कि उपासना करनेवाले मुमुक्षुजनों अधिकारिता प्राप्त करने हेतु देश, काल, क्रिया, ध्यान, शास्त्र, दीक्षा, मन्त्र और संग इस आठ विषयों के परिप्रेक्ष्य में हेय एवम् उपादेय कर्मों का विवेचन किया गया है | प्रत्येक आठ विषयों कि सत् एवम् असत् स्वरूप में भिन्न-भिन्न विवेचना कि गई है |

इस आठ विवेच्य विषय के अन्तर्गत संग नामक आठवें विषय में साधुपुरुष के लक्ष्णों का विवेचन किया गया है | मुमुक्षुजनों को ब्रह्मप्राप्ति कि ओर ले जानेवाला साधु कैसा होना चाहिए ? और मोक्ष कि इच्छा रखनेवाले को कैसे साधु का संग करना चाहिए? इत्यादि विवेचन श्लोक क्रमांक ५६ से ७० तक किया गया है |

संप्रति 'बुद्धिप्रदीप' ग्रन्थ के अनुसार साधुपुरुष के लक्षणों विहंगम विवेचन किया जायेगा |

'साधु' शब्द कि सामान्य परिभाषा :-

संस्कृत भाषा में प्रायः 'साधु' शब्द का अर्थ 'सज्जन व्यक्ति' है |

'साध्नोति परकार्यम् इति साधुः|'[1]

जो दूसरों(=मुमुक्षुजनों) का कर देता है वः 'साधु' है |

यहाँ पर 'कार्य' का तात्पर्य ब्रह्मसंबन्ध से है |

साधुपुरुष के लक्षण :-

'बुद्धिप्रदीप्' के कर्ता शुकानन्दमुनि साधुपुरुष के लक्षणों का विवेचन करते हुए प्रथम लक्षण बता रहे हैं कि -

सच्छास्त्रोक्तानि लक्ष्माणि सतां तेषां वदाम्यहं |

साष्टांगब्रह्मचर्यस्था धनमात्रत्यजाश्च ये ||५६||[२]

यहाँ शुकानन्दमुनि शास्त्र का प्रमाण प्रस्थापित करते हुए बतातें है कि, सच्छास्त्रों में जो साधुपुरुष के लक्षणों के लक्षण दिए गये हैं उन्हीं लक्षणों के आधार पर मैं साधुपुरुष के लक्षणों का विवेचन कर रहा हुँ |

जो अष्टांग ब्रह्मचर्य युक्त अर्थात् अष्ट प्रकार के स्त्री संबन्ध से मुक्त ओर निष्कामि है वे साधुपुरुष है |

यहाँ अष्टांग ब्रह्मचर्य साधुपुरुष का प्रथम लक्षण बताय गया है | मन से उत्पन्न कामोद्दिपक् भावों का त्याग करना ही अष्टांग ब्रह्मचर्य है |

(१) श्रवण - स्त्रीशृङ्गार एवं कामविषयक वर्णानों का श्रवण न करना |

(२) कीर्तन - कामोद्दिपक् गीत एवं साहित्य को न पढ़ना |

(३) प्रेक्षण - कामोद्दिपक् शारीरिक रचना को न देखना |

(४) केलि - स्त्री के साथ रतिक्रीडा न करना |

(५) शृङ्गार - चित्त को आकर्षित करनेवाले पदार्थों से दूर रहेना |

(६) स्मरण - मन से उत्पन्न कामोद्दिपक् भाव का त्याग करना |

(७) गुह्यभाषण - एकान्त में कमोत्तेजित बातें न करना |

(८) स्पर्श - कामोद्दिपक् पदार्थों का स्पर्श न करना |

इस अष्टांग ब्रह्मचर्य में रत रहनेवाला साधुपुरुष ही ब्रह्मप्राप्ति कि ओर स्वयं को ले जाता है | इसलिए अथर्ववेद में कहा गया हे कि,

ब्रह्मचारी जनयन् ब्रह्मापो लोकं प्रजापतिं परमेष्ठिनं विराजम् |

गर्भो भूत्वामृतस्य योनाविन्द्रो ह भूत्वाऽसुरांस्ततर्ह ||[3]

अतः यहाँ पर अष्टांग ब्रह्मचर्य के पालन को साधुपुरुष का प्रथम लक्षण बताय गया है | शुकानन्दमुनि आगे साधुपुरुष के लक्षणों को बताते हुए कहते हैं कि,

नानाविधारसास्वाद त्यागिनः स्नेहवर्जिताः |

निर्मानाः क्रोधहीनाश्च द्रोहेर्ष्यारहितास्तथा ||५७||[4]

साधुपुरुष जो रसनेन्द्रिय को जितनेवाला हो, भगवद्भक्ति में ही आसक्त हो, मान रहित हो, क्रोध, ईर्ष्या और द्रोह रहित हो |

आगे साधुपुरुष के लक्षणों को बताते हुए शुकानन्दमुनि बता रहे हैं कि,

निर्मोहा अप्रमत्ताश्च यावदर्थपरिग्रहाः |

हर्यन्यवासनाहीना निर्भयाश्च विवेकिनः ||६२||[5]

वह साधुपुरुष है जो मोह से विपरीत है | मोह क्या है ? मोह अर्थात् - विपरीत ज्ञान | मूल तत्त्व को उसके मूल स्वरूप में न देखना वह मोह है | अतः जो साधुपुरुष है उन्हें प्रमाद का त्याग कर ब्रह्मरूप जो तत्त्व है उनके मूल स्वरूप के यथार्थ दर्शन हेतु प्रवृत्त रहना चाहिए |

'येन तत्त्वं दृश्यते तद्दर्शनम् |'[6]

संग्रहवृत्ति का त्याग करके पदार्थेच्छा से परे वासना मुक्त ओर अभय युक्त होकर सत् एवम् असत् के विवेक को दृढ करना चाहिए | कबीरजी ने अपने दोहे मे कहा है कि,

साधु गाँठ न बाँधई उदर समाता लेई ।

आगे पीछे हरि खडे जब माँगत सो देय ||

शुकानन्दमुनि आगे साधुपुरुष के लक्षणों को कहेतें है -

अकार्यलज्जाः सन्त्यक्त ग्राम्यवार्ताकथाश्चये |

अहिंसाधर्मनिरताः पैशुन्यरहितास्तथा ||६३||[7]

स्वयं क्रिया से स्वयम को और दूसरों लज्जित न करनेवाला, ग्राम्यवार्ता से परे अहिंसाधर्म को धारण करनेवाला होना चाहिए |

साधु समाज का पथदर्शक होत है | साधुपुरुष को शास्त्र प्रतिषिद्ध कर्म नहि करना चाहिए अन्यथा आगे चलकर दृष्टान्त के रूप में समाज भी गलत कर्मो को करता है | इसिलिए श्रीमद्भग्वद्गीता में कहा गया है कि,

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः |

स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ||[8]

अतः साधुपुरुष का जीवन अन्यों के लिए प्रेरणादायी होना चाहिए |

अन्त में शुकानन्दमुनि साधुपुरुष के लक्षणों के साररूप श्लोक लिखते हुए बतातें है कि,

ये विज्ञाय गुणान् दोषान् दत्तात्रेयवदात्मना |

दोषान्विहाय गृह्णीयुर्गुणान् सच्छास्त्रकीर्तितान् ||६५||[9]

भगवान दत्तात्रेय कि तरह स्वयं अपनी बुद्धि के माध्यम से सच्छास्त्र में वर्णित गुण एवं दोष को पहेचान कर, दोषों का त्याग कर एवं गुणों को ग्रहण करता है वह साधुपुरुष है |

यहाँ पर शुकानन्दमुनि ने साधुपुरुष के लक्षणों कि तुलना भगवान दत्तात्रेय से कि है | भगवान दत्तात्रेय कि तरह स्वयं प्रज्ञा से सच्छास्त्रों प्रतिपादित गुण एवं दोषों का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर गुणग्राही बनाना चाहिए |

श्रीमद्भागवत के ग्यारहवें सकन्ध के अध्याय ७ से १२ तक 'अवधूतोपाख्यन' के अन्तर्गत राजा यदु एवं भगवान दत्तात्रेय का संवाद वर्णित है | इस संवाद को 'अवधूतगीता' के नाम से भी जाना जाता है | भगवान दत्तात्रेय निजानन्द(=ब्रह्मानन्द) में मस्त रहनेवाले गुणग्राही साधुपुरुष थे | उन्होने जड़-चेतन सभी पदार्थों से कुछ ना कुछ गुण ग्रहण करके के २४ तत्त्वों को गुरुरूप में स्वीकार किया था |

भगवान दत्तात्रेय कह रहे है कि,

सन्ति मे गुरवो राजन् बहवो बुद्ध्युपाश्रिताः |

यतो बुद्धिमुपादाय मुक्तोऽटामीह तान् शृणु ||[10]

यहाँ शुकानन्दमुनि ने भगवान दत्तात्रेय के जीवन को ही साधुपुरुष के लक्षणों से जोड दिया है |

अन्त में शुकानन्दमुनि कहते है कि जीव और ब्रह्म कि एकता को यथार्थरूप से प्राप्त कर परब्रह्म स्वरूप परमात्मा कि भक्ति करें वे ही साधुपुरुष है | मुण्डकोपनिषद् में कहा गया है कि,

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः |

क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ||[11]

शुकानन्दमुनि साधुपुरुष के लक्षणों कि तारतम्यता को कहते हैं कि मैने बताये लक्षणों को धारण करनेवाला साधुपुरुष ब्रह्मस्वरूप के साक्षात्कार को प्राप्त करता है एवं मोक्ष का अधिकारी बनता है |

संदर्भ ग्रन्थ सूचि :-

(1) सृजनझाः, वाचस्पत्यम्, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानं, मोबाइल एप्लिकेशन |

(2) सच्छाशास्त्रोक्तानि लक्ष्माणि सतां तेषां वदाम्यहं |

साष्टांगब्रह्मचर्यस्था धनमात्रत्यजाश्च ये || बुद्धिप्रदीपः - 56

(3) अथर्ववेद, 11.5.7

(4) नानाविधारसास्वाद त्यागिनः स्नेहवर्जिताः |

निर्मानाः क्रोधहीनाश्च द्रोहेर्ष्यारहितास्तथा || बुद्धिप्रदीपः - 57

(5) निर्मोहा अप्रमत्ताश्च यावदर्थपरिग्रहाः |

हर्यन्यवासनाहीना निर्भयाश्च विवेकिनः || बुद्धिप्रदीपः - 62

(6) मुसलगाँवकर, (2013) तर्कमीमांसा-हिन्दी व्याख्या, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, पृ.-9

(7) अकार्यलज्जाः सन्त्यक्त ग्राम्यवार्ताकथाश्चये |

अहिंसाधर्मनिरताः पैशुन्यरहितास्तथा || बुद्धिप्रदीपः - 63

(8) श्रीमद्भगवद्गीता,गीताप्रेस-गोरखपुर(2006), अध्याय-3, श्लोक-21, पृ-95

(9) ये विज्ञाय गुणान् दोषान् दत्तात्रेयवदात्मना |

दोषान्विहाय गृह्णीयुर्गुणान् सच्छास्त्रकीर्तितान् || बुद्धिप्रदीपः - 65

(10) श्रीमद्भागवतमहापुराणम्, गीताप्रेस-गोरखपुर(1997), स्कन्ध-11, अध्याय-7, श्लोक-३२, पृ-605

(11) शास्त्री रा. (2017), वेदान्तसारव्याख्या, परिमल प्रकाशन-दिल्ली, पृ.-278

परिशिष्ट-१

शुकानन्दमुनि कृत 'बुद्धिप्रदीप्'

(साधुपुरुष के लक्षणों वर्णन ५६ से ७० श्लोक)

सच्छाशास्त्रोक्तानि लक्ष्माणि सतां तेषां वदाम्यहं |

साष्टांगब्रह्मचर्यस्था धनमात्रत्यजाश्च ये ||५६||

नानाविधारसास्वाद त्यागिनः स्नेहवर्जिताः |

निर्मानाः क्रोधहीनाश्च द्रोहेर्ष्यारहितास्तथा ||५७||

निर्मत्सरा आत्मनिष्ठा निर्लोभाश्च जितेन्द्रियाः ।

तृष्णाविरहिताः शान्ताः शुद्धात्मानो दृढव्रताः ॥५८॥

क्षमाशीलः कारुणिकाः सर्वजीवसुहृत्तमाः ।

अनुत्पन्नारयोऽहंता ममतारहितास्तथा ॥५९॥

ऋजव: शुचयो दान्ता निर्दंभा निर्मदाश्च ये ।

धैर्यवन्तस्तपोनिष्ठा सच्छास्त्रवयसनास्तथा ॥६०॥

अत्यास्तिकाश्च विषयपञ्चकासक्तिवर्जिताः ।

संतुष्टाश्च निजश्लाघारहिताः स्थिरमेधसः॥६१॥

निर्मोहा अप्रमत्ताश्च यावदर्थपरिग्रहाः ।

हर्यन्यवासनाहीना निर्भयाश्च विवेकिनः ॥६२॥

अकार्यलज्जाः सन्त्यक्त ग्राम्यवार्ताकथाश्चये ।

अहिंसाधर्मनिरताः पैशुन्यरहितास्तथा ॥६३॥

स्वस्वभावजये शूरास्तथा निजमनोजये ।

चेतसो भगवान्मूर्तौ धारणे च सदा रताः ॥६४॥

ये विज्ञाय गुणान् दोषान् दत्तात्रेयवदात्मना ।

दोषान्विहाय गृह्णीयुर्गुणान् सच्छास्त्रकीर्तितान् ॥६५॥

भक्तिधर्मसुतस्य श्रीहरेश्चरणपङ्कजम् ।

समाश्रिताद्दृढं ये स्युः सर्वाविर्भावधारिणः ॥६६॥

अक्षरब्रह्मणोऽनन्ते तेजसि श्रीहरौ स्थिते ।

सदा दिव्याऽवयविनि निष्ठां प्राप्ताश्च येऽचलाम् ॥६७॥

हर्याविर्भावमूर्तिनां जन्मकर्मगुणान् शुभान् ।

दिव्यान्विज्ञाय शृणुयुः कथयेयुश्च येऽनवाहम् ॥६८॥

प्राप्याऽपि ब्रह्मणैक्यं ये स्वात्मनः सर्वथा हरेः ।

परस्य ब्रह्मणो भक्तिं न जहीरन् कदाचन ॥६९॥

हरेर्माहात्म्यबोधेन युक्तां भक्तिं चऽन्वहम् ||

कुर्युरेकन्तिकीं ज्ञेयास्ते सन्तः शीलभूषणाः ||७०||

अङ्कित दोलतलाल कुकडीया

शोधछात्र, संस्कृतविभाग

के.एस.के.वी.कच्छ विश्वविद्यालय

भुज-कच्छ |

संपर्क - 9106745754